माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 18 अप्रैल 2016 को आई0टी0एम0 ग्लोबल स्कूल, ग्वालियर के भवन के लोकार्पण अवसर पर दिया गया भाषण।

मध्य प्रदेश सरकार की महिला एवं बाल विकास मंत्री और इसी नगर की निवासी, जिन पर हम सबको गर्व है, श्रीमती माया सिंह जी; इस विश्वविद्यालय के चांसलर श्री रमा शंकर जी, ITM Global School की उपाध्यक्ष श्रीमती रूचि सिंह चौहान जी, इस विद्यालय के प्राचार्य श्री अजय किशोरी लाल जी, इस अवसर पर उपस्थित सभी गणमान्य आमंत्रित महानुभाव, अभिभावक भाइयो–बहनो तथा प्यारे बच्चो!

जब दिल भर जाता है तो भावनाएँ प्रधान हो जाती हैं और बुद्धि काम नहीं करती। वैसी ही स्थिति आज इस भवन के लोकार्पण के समय और चांसलर महोदय के उद्‌बोधन को सुनकर मेरी हुई है। वास्तव में तो देश स्वतंत्र होने के बाद, जो देश के भविष्य के बारे में, देश की प्रगति के बारे में, राष्ट्रोत्थान के बारे में सोचते हैं, उनके सामने एक ही समस्या थी कि शिक्षा पद्धति कैसी हो ? जिससे ऐसे व्यक्ति का विकास हो सके, व्यक्ति का निर्माण हो सके, जो राष्ट्र की और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का माकूल जवाब दे सके।

इसलिए देश स्वतंत्र होने एक वर्ष बाद 1948 में डॉ0 राधाकृष्णन की अध्यक्षता में शिक्षा के लिए कमीशन बनाया गया। उसके बाद और कमीशन बने, मुरारी लाल कमीशन बना, कोठारी कमीशन बना। लेकिन देश की स्वतंत्रता के 68 वर्ष के बाद भी हम वह शिक्षा–पद्धति नहीं ढूंढ पाए या अपने बच्चों के लिए इस तरह की प्रØिया नहीं निर्धारित कर पाए, जिसमें से बच्चा निकले और निकल कर समाज के लिए, राष्ट्र के लिए और परिवार के लिए समस्या नहीं बने, समाधान बने। वह राष्ट्र और समाज के लिए burden नहीं बने, बोझ नहीं बने, वह राष्ट्र और समाज के लिए asset बने, राष्ट्र और समाज की सम्पत्ति बने, धरोहर बने। ऐसी कोई व्यवस्था हम आज तक तय नहीं कर पाए।

आयोग के अलावा भी अपने देश में जो महापुरूष हुए, हर एक ने शिक्षा पर कहा है कि शिक्षा कैसी होनी चाहिए। स्वामी विवेकानन्द जी ने तो यहाँ तक कहा कि मनुष्य के अंदर एक potential है। मनुष्य के अंदर एक inner Capacity है। वह भगवान ने दी है। जब उसने जन्म लिया है तभी उसको दी है। समाज का काम शिक्षा पद्धति के माध्यम से ही है कि वो inner potential को जाने और विकसित करे, manifestation of inner capasity। लेकिन आपको इसके लिए ऐसी शिक्षा पद्धति तैयार करनी पड़ेगी, ऐसा वातावरण तैयार करना पड़ेगा, ऐसे अध्यापक तैयार करने पड़ेंगे, ऐसे भवन तैयार करने पडेंगे, ऐसे equipment तैयार करने पडेंगे।

स्वामी विवेकानंद जी कहते कि अगर आप ज्ञान, नॉलेज इसको ठूंस–ठूंस कर किसी आदमी के दिमाग में भरते हो तो उससे उसका निर्माण नहीं होगा। जैसे ज्यादा भोजन खिलाने से पेट खराब होता है, बदहजमी होती है, अस्वस्थ होते हैं, वैसे ही फालतू का ज्ञान व्यक्ति के दिमाग में ठूंस–ठूंस कर आप उसको अस्वस्थ बना देंगे। ऐसे ज्ञान से वह जिंदगी में कर तो कुछ नहीं पाएगा, बेकार होगा लेकिन वह जो ठूंस–ठूंस कर आपने ज्ञान भरा है वह उसे जिंदगी भर उछल–कूद करके परेशान करता रहेगा।

महर्षि अरविंद ने तो उसे तात्विक भाषा में, दार्शनिक भाषा में, आध्यात्मिक भाषा में बोला– यह जो आदमी आपको दिख रहा है, इसे क्या समझते हैं आप, क्या है यह? क्या यह सिर्फ शरीर है ? क्या यह सिर्फ इंद्रियाँ हैं ? क्या यह सिर्फ इच्छाओं का पुतला है कि उसकी desires satisfied करो तो सुखी रहेगा या वह आर्थिक प्राणी है कि पैसा जो डालेगा, साधन डालेगा तो सुखी रहेगा? ऐसी शिक्षा जो पैसे पर अवलंबित हो वह उसे आप सिखा दो। आप क्या समझते हो इस आदमी को ? आदमी है क्या ? आप जिसको शिक्षित कर रहे हो, उस आदमी को जब तक आप नहीं समझोगे तो आप किसे शिक्षित करने जा रहे हो? अंधेरे में गोली चला रहे हो? इसलिए महर्षि अरविंद ने कहा कि आदमी सिर्फ शरीर नहीं है। यह आदमी सिर्फ इच्छाओं का पुतला नहीं है। यह सिर्फ इंद्रियों के वशीभूत नहीं है। यह सिर्फ आर्थिक प्राणी नहीं है बल्कि इसके शरीर के साथ इसके पीछे मन है, Mind है। इसके पीछे बुद्धि है, Intellect है। इसके पीछे प्राण हैं। प्राण जाते ही आदमी समाप्त हो जाता है। वह किसी काम का नहीं रहता, Dead body हो जाती है। आदमी सिर्फ शरीर और इंद्रियाँ नहीं है। इसके पीछे मन है। इसके पीछे बुद्धि है। इसके पीछे प्राण हैं और एक और चीज है जो इसके पीछे है, वह है soul, आत्मा। जो आपके अंतःकरण में विराजती है।

आप गायत्री मंत्र का अर्थ अगर समझने की कोशिश करेंगे तो उसमें भगवान से यही प्रार्थना की गई है कि मेरे हृदय में आकर विराजिए आप ताकि मैं कोई अनर्थ न करूं। किसी गलत रास्ते पर न जाऊं। इसलिए उन्होंने कहा कि यह आदमी सिर्फ इच्छाओं का पुतला नहीं है, आर्थिक प्राणी नहीं है, सिर्फ शरीर नहीं है। इसके पीछे मन है। इसके पीछे बुद्धि है। इसके पीछे प्राण हैं और इसके पीछे आत्मा है। आपकी बुद्धि अगर गलत काम करने को कहती है तो पीछे से आपकी आत्मा कहती है मत करो। आप जिसको कभी–कभी आत्मा की आवाज कहते हो। आजकल तो अनुशासन तोड़ना हो तो आत्मा की आवाज कही जाती है। अगर अनुशासन तोड़ना है तो कहते हैं कि नहीं अनुशासन तो ठीक है, मेरी आत्मा की आवाज नहीं कहती है। तो आत्मा की आवाज इस अनुशासन के लिए है, अनुशासन तोड़ने के लिए नहीं है। यह आत्मा की आवाज आपको सही रास्ता, सद्बुद्धि बताने के लिए है।

इसलिए महर्षि अरविंद ने कहा कि शिक्षा का मतलब यह है कि सारे तत्वों का विकास करो। इनमें पहले शरीर का विकास करो। जो आप इस स्कूल के अंदर इतने स्पोर्टस, इतने play grounds की व्यवस्था कर रहे हैं ये सब शरीर के विकास के लिए हैं। इसलिए शरीर का विकास चाहिए। दूसरे आपके मन का विकास चाहिए, मन नियंत्रित चाहिए, मन अनुशासित चाहिए। यह मन बहुत बड़ा राक्षस है। यह पता नहीं क्या करवा देगा ? सारे अच्छे काम भी मन से होते हैं और बुरे काम भी मन से ही होते हैं। तीसरे बुद्धि आपको विश्लेषण की शक्ति देती है कि क्या करना है और क्या नहीं करना ? चौथे है प्राण जिससे हम जीवित हैं। और अंत में आत्मा। इसकी डोर ईश्वर से है। यह ईश्वर का अंश है।

अतः महर्षि अरविंद ने कहा था कि शिक्षा का मतलब यह है कि इन पाँचों का विकास करो। इसको उन्होंने कोषों का नाम दिया है। शरीर को उन्होंने अन्नमय कोष कहा है, क्योंकि शरीर अन्न से बनता है। मन को उन्होंने मनोमय कोष कहा है। बुद्धि को उन्होंने ज्ञानमय कोष कहा है। प्राण को उन्होंने प्राणमय कोष कहा है और इस आत्मा को उन्होंने आनन्दमय कोष कहा है। जब इन सब चीजो का विकास होता है, तब फिर वह आदमी क्या बनता है? वह देवता बनता है, दानव नहीं बनता। आदमी बीच में है। आगे की श्रेणी देवता है। उसके पीछे की श्रेणी दानव है। दुर्योधन और युधिष्ठिर में फर्क क्या था ? दुर्योधन तो इच्छाओं का पुतला था। मन से चलता था। उसके सारे कोष विकसित थे ही नहीं। इसलिए वह दानव था। दूसरी ओर युधिष्ठिर मानव से देवता बने क्योंकि उनके पाँचों कोष विकसित हुए थे।

मेरे पास भी ज्यादा समय नहीं है क्योंकि दूसरा कार्यक्रम है। इसलिए संक्षेप में बोल रहा हूं। महापुरूषों ने शिक्षा के बारे में बहुत कुछ कहा है। लेकिन कहा है जमीन पर काम नहीं हुआ। आप जरा दो मिनट महात्मा गाँधी के विचार सुनिए। महात्मा गाँधी क्या कहते हैं ? वे कहते हैं कि अपने देश के अंदर 3R की शिक्षा है। 3R का मतलब क्या है– Reading का R , Writing का R और Arithmetic का R. तीनों शब्दों में R है। बच्चे को पढ़ना सिखा दो, लिखना सिखा दो, हिसाब किताब लगाना सिखा दो। बस पढ़ गए?

लॉर्ड मैकाले ने देश के अन्दर यही तो किया। आजकल के तथाकथित विद्यालय क्लर्क बनाते हैं। ये फिलॉस्फर नहीं बना रहे। ये राष्ट्रभक्त नहीं बना रहे। ये विद्वान नहीं बना रहे। ये संगीतकार नहीं बना रहे। ये खिलाड़ी नहीं बना रहे। क्योंकि वे व्यक्ति का पूरा विकास कर ही नहीं रहे। पूरा व्यक्ति सिर्फ इच्छाएँ नहीं होतीं।

इसलिए महात्मा गाँधी ने जो दुनिया में शिक्षा की बात की उसमें उन्होंने कहा कि हमें 3R की शिक्षा नहीं चाहिए। हमें 3H चाहिएं। 3H का मतलब समझिए। 3H

में से एक H उनका Head है। Head का H. दूसरा Hand का H. और तीसरा Heart का H.

काफी तारतम्य है महर्षि अरविंद में और महात्मा गाँधी में। वे कहते थे कि सही शिक्षा वह है जो 3H का समन्वय कर दे। जो आपका दिल सोचता है, जो आपकी आत्मा गवाही देती है, आपका मस्तिष्क भी वही करेगा, वही सोचेगा। जो मस्तिष्क आपके Hand को कहेगा, हाथ को कहेगा, हाथ वही काम करेगा। इसलिए शिक्षित आदमी हम उसे कहते हैं जिसके Hand, Head और Heart तीनों का coordination है, तीनों का एकाकार है, तीनों का समन्वय है। कहीं पर कोई अंतर नहीं है।

ऐसा व्यक्तित्व निर्मित करके देखिए आप। वह षड़यंत्रकारी नहीं होगा, वह भेदभाव वाला नहीं होगा, वह समस्या पैदा करने वाला नहीं होगा, वह समस्याओं का समाधान करने वाला होगा। लेकिन महात्मा गाँधी चिल्लाते–चिल्लाते चले गए। Education के बारे में या अन्य महापुरूषों के बारे में किसी ने कुछ सुना नहीं।

एक चौथी बात और है जो 21वीं शताब्दी में आवश्यक है। यह 21वीं सदी भारत की है। कई महापुरूष कहकर गए हैं। आज भी हमारे नेता कह रहे हैं। प्रधानमंत्री खुद कह रहे हैं कि 21वीं शताब्दी भारत की है। वे परिवर्तन दिख भी रहे हैं। देश के प्रधानमंत्री विदेशों में जहाँ–जहाँ जाते हैं, वे अपना डंका बजाकर आते हैं। पूरे विश्व के लोग, विश्व की किसी भी समस्या के निदान और समाधान को निकालने के लिए भारत के प्रधानमंत्री की तरफ देखते हैं। चाहे Solar Power Energy हो, चाहे Climate Change हो और चाहे फिर Terrorism हो।

इसलिए 21वीं शताब्दी भारत की है। जब 21वीं शताब्दी भारत की है तो कैसे होगी? वह यहाँ की जनता से होगी, जनसंख्या से होगी, बच्चों से होगी। जैसा भारतवर्ष चाहिए, जैसा भारतवर्ष का role चाहिए, वैसे role का व्यक्ति तैयार करने के लिए laboratry कहाँ हैं, प्रयोगशालाएँ कहाँ हैं? कहाँ बनते हैं लोग? वे बनते हैं शिक्षा से, और जो शिक्षा देते हैं वे हैं स्कूल।

देश में जितने भी कमीशन बने उनका एक ही कहना था कि किसी देश का भविष्य देखना चाहते हो तो कहाँ दिखेगा आपको, कहां मिलेंगे लोग? बड़े–बड़े उद्योग लगे हैं, खेती खूब हो रही है, सिंचाई की व्यवस्था है और सारी चीजें चल रही हैं। उससे आर्थिक संपदा आ सकती है। लेकिन देश का भविष्य आपको वहाँ नहीं दिखेगा। देश का भविष्य आपका दिखेगा college में और institute के classrooms में। वहाँ देखो क्या हो रहा है, आप कैसे लोग तैयार कर रहे हैं। इसमें देश का भविष्य दिखेगा। इसलिए जो नियति, जो destiny, जो कर्त्तव्य है भारत का पूरे विश्व में उसको निभाते हुए 21वीं शताब्दी में पूरे विश्व में छाने के

लिए जरूरत इस बात की है कि हमारे देश का नौजवान, हमारे देश के बच्चे, हमारे देश के नागरिक योग्य बनें।

यह सब कुछ जो मैने बोला है, इस सबको पूरा करने का सपना मैने आज इस ITM Global School में देखा है। मैं भी देखकर के बहुत आश्चर्यचकित हुआ, प्रसन्न भी हुआ और मैं गर्व भी अनुभव करता हूँ कि इसका भूमिपूजन भी मैने ही किया था और लोकार्पण भी मैं ही कर रहा हूँ। क्योंकि यह उस व्यवस्था का, उस शिक्षा पद्धति का पर्याय है जो आज 21वीं सदी में भारत की जरूरत है और जिस तरह की शिक्षा पद्धति की हमारे महापुरूषों ने वकालत की है और जिसे सामान्य समरसता कहते हैं। हर तरह के अभाव को नजरंदाज करते हुए प्रत्येक को मौका मिल सकता है, ये सारी की सारी बातें हमें इस स्कूल में देखने को मिली हैं।

इसलिए अब आप truly Indian बनिए, विशुद्ध रूप से भारतीय बनिए। लेकिन विश्व में डंका अगर बजाना है तो truly global भी बनिए। उसके बिना भारत तो स्वीकार कर लेगा परन्तु विश्व आपको स्वीकार नहीं करेगा। पूरी दुनिया आज एक है। skill development, Digital India, Startup India ये जो 21वीं सदी की आवश्यकताएं हैं उनके लिए जो व्यक्तित्व तैयार करने की व्यवस्था यहाँ पर इस विद्यालय में हुई है, उससे मुझे बहुत प्रसन्नता है।

इन्हीं शब्दों के साथ इस विद्यालय के लिए बहुत बहुत शुभकामनाएँ। 17 अक्तूबर 2015 को मैने भूमि पूजन किया था। उस समय पूछा था कि क्या 6 महीने में में यह विद्यालय बन जाएगा? यह 6 महीने में ही बन गया। शुभकामनाएँ और इसी तरह से आप आगे बढ़ें तथा रमाशंकर जी का जो सपना है वह पूरा हो। देश को निश्चित रूप से इससे लाभ मिलेगा। यह ग्वालियर की शान होगा और शिक्षा के क्षेत्र में कोई आदर्श नमूना अगर दिखाना होगा तो हम ग्वालियर का नाम लेंगे कि आप ITM Global School में जाकर देखिए।

बहुत बहुत धन्यवाद!